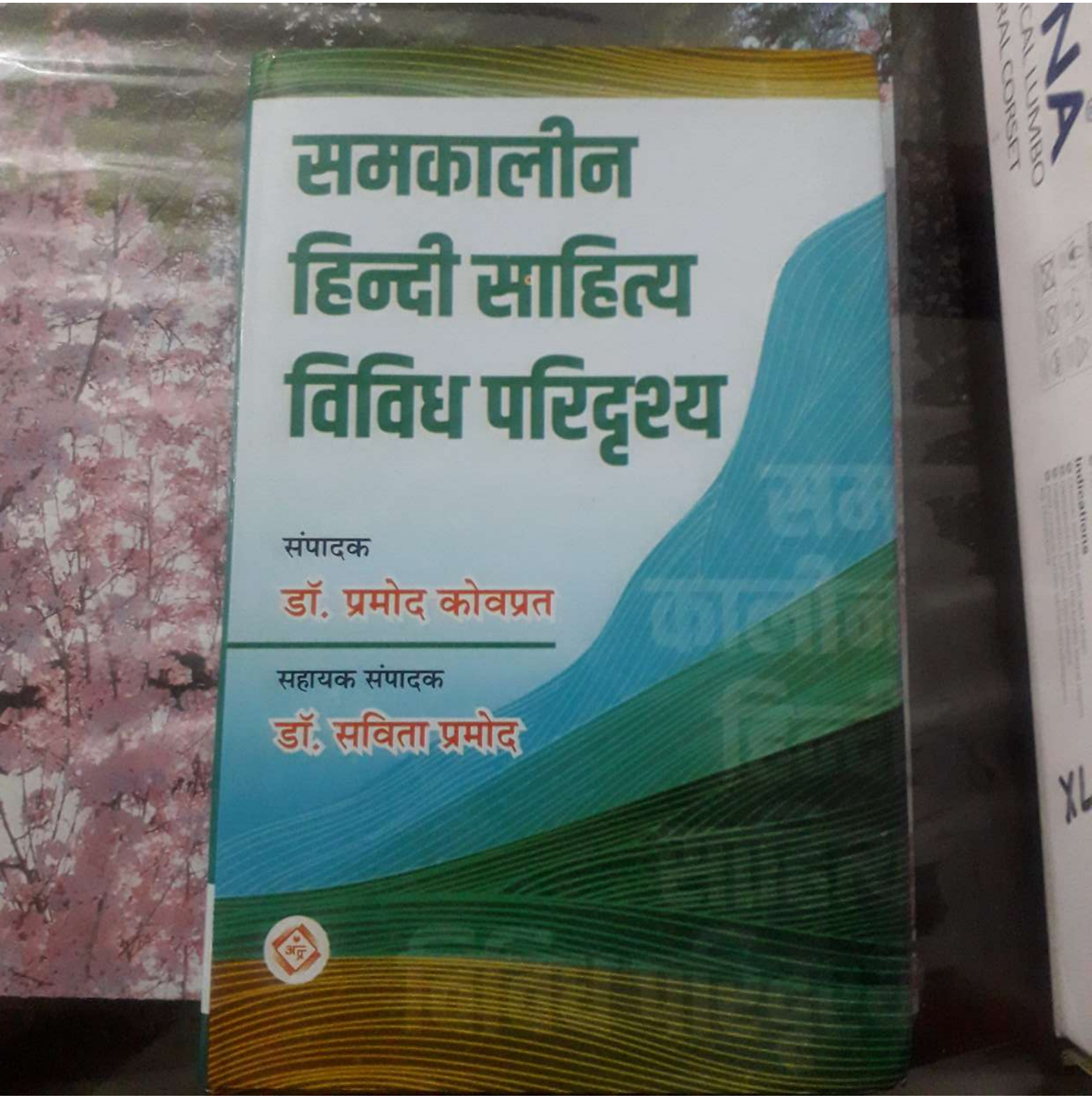
समकालीन
हिन्दी साहित्य
विविध परिदृश्य
संपादक
डॉ. प्रमोद कोवप्रत
सहायक संपादक
डॉ. सविता प्रमोद

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। संपादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पुस्तक	:	समकालीन हिंदी साहित्य : विविध परिदृश्य
संपादक	:	डॉ. प्रमोद कोवप्रत
सहायक संपादक	:	डॉ. सविता प्रमोद
आई.एस.बी.एन.	:	978-93-91913-11-3
संस्करण	:	प्रथम, सन् 2022
©	:	संपादक
मूल्य	:	₹ 750.00 मात्र
प्रकाशक	:	अमन प्रकाशन 104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.) मो. : 09839218516, 9044344050 फोन : 0512-3590496 (ऑफिस)
शब्द सज्जा	:	अनुप्रा ग्राफिक्स, बारादेवी, कानपुर
मुद्रक	:	आर.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, कानपुर

SAMKALEEN HINDI SAHITYA : VIVIDH PARIDRASYA

Edited by : **Dr. Pramod Kovprat**

Co-Edited by : **Dr. Savita Pramod**

Price : Seven Hundred Fifty Rupees Only

भूमिक

साहित्य हमेशा परिवर्तनगामी होता है
बदलता रहता है। समय का सच्चा स्वरूप स
से हिंदी साहित्य में समय-समय की छवियां
प्रवृत्तियों का बाहुल्य देख सकते हैं। इसका
समस्याएँ हैं, आशंकाएँ एवं उत्कंठाएँ हैं। अने
आए हैं। आज स्त्री, दलित, आदिवासी, पर्या
के केन्द्र में है।

'समकालीन हिंदी साहित्य : विविध प
के बहुआयामी पक्षों को उद्घाटित करने का
लेख हैं, जो विषय की दृष्टि से बहुआया
किन्नर जीवन-संघर्ष, नारी अस्मिता की स
मानवाधिकार, अमानवीयता की समस्या, बा
में उभर कर आते हैं। सबसे बड़ी विशे
इसीलिए भारतीय युवकों का दृष्टिकोण भी
पुस्तक के लेखक हैं। लेकिन अधिकांश
पुस्तक का विशेष महत्व है। इस पुस्तक क
प्रमोद ने काफी मदद की है। उनके प्रति मैं
के सभी लेखकों के प्रति मैं अपना स्नेह
प्रकाशित करने वाले अमन प्रकाशन के
सुधी पाठकों की प्रतिक्रिया सादर प्रार्थित

क कि आत्महत्या भी कर रहा है यह हम सभी के
त प्रश्न है। आज 10 माह हो चुके हैं किसानों के
के बीच चल रहे इस मुद्दे पर उच्चतम न्यायालय ने
क कमेटी गठित करने की बात कही और किसान
चाहते वे इस कमेटी से बात करना चाहते हैं। इस
स किसान बंधुओं का ध्यान वर्तमान सरकार द्वारा
ाकर्षित कराना चाहते हैं; आप अपने अधिकारों
ही इन लाभों से भी लाभान्वित होते रहें-
ब्याज 7% से 4% किये जाने वाला लाभ इससे
भ प्राप्त होगा।
ी और उपज में वृद्धि - यूरिया को नीमकोटेड
वपत होगी जिससे उपज अच्छी व अधिक मात्रा

) करोड़ रुपये की यूरिया बनाने वाली फैक्ट्रियों
य व सही कीमत पर यूरिया किसानों को प्राप्त
)% यूरिया कैमिकल फैक्ट्रियों को व सिन्थेटिक
स मिलावट के कारण देश के कृषि वैज्ञानिकों
या को नीम कोटेड करवा दिया गया।
धिकतम लाभ प्राप्ति हेतु उच्च तकनीक का ज्ञान
हली बार ड्रोन द्वारा बीजारोपण किया गया।
हर 2 साल पर मिट्टी की जाँच होनी चाहिए।
ानों के पास आज स्वास्थ हेल्थ कार्ड है।
भों से लाभन्वित होते हुए अपने आंदोलन को
ोषित किसानों को न्याय मिले यही ईश्वर से
साथ ही हम अपनी वाणी को विराम देते हैं-

ली
याली
ड़ा है
ी
ईश्वर
ी
बरी
न की।"

विध परिदृश्य

समकालीन कविता में वर्तमान जीवन यथार्थ

– डॉ. हेमलता सी. पी.

समकालीन कविता के क्षेत्र में नए-नए कवि, नए-नए भाव बोध के साथ तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का चित्रण उनकी रचनाओं में प्रस्तुत करते है। सामान्य रूप से कवि अपने जीवन परिवेश को पहचानकर सृजनात्मक क्षमता के प्रयोग के साथ काव्य जगत में अपना-अपना योगदान देते हैं। मानवता को बचाए रखकर, मूल्यों की रक्षा के लिए कवि लेखनी चलाते हैं। दुनिया में होनेवाले नए-नए बदलाव के अनुसार कविता में परिवर्तन आते हैं। अस्सी और बाद के काव्य जगत में अरुण कमल, मंगलेश डबराल, वीरेन डगवाल, मदन कश्यप, उदय प्रकाश, जयप्रकाश कर्दम, ओमप्रकाश वाल्मीकि, कुमारअंबुज, पवन करण, अनामिका, कात्यायनी, सविता सिंह, अनीता भारती, गगन गिल, वर्तिका नन्दा आदि की रचनाएँ सर्वमान्य योगदान देते हैं। इनकी रचनाओं में समकालीन परिस्थितियों में जीवन बितानेवाले मनुष्य का यथार्थ चित्र उभरा हुआ है। सामाजिक, आर्थिक और परिवारिक विषमताओं से जूझकर जीनेवाले, जीवन रूपी लड़ाई से पराजित होकर अत्महत्या करनेवाले, सामाजिक उत्पीड़न और बलात्कार से मारे जानेवालो का चित्र इनकी रचनाओं का केंद्र बन गए है। इसके साथ अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए लगातार कोशिश करनेवाली स्त्री, हाशिये पर पड़े हुये दलित जीवन आदि के घोर जीवन यथार्थ ये हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। घरवाली स्त्री की विषमताएँ, कामकाजी महिलाओं के घुटन, इनके तन-मन की असुरक्षित हालत आदि का पर्दाफाश भी इन्हीं कवियों की कविताएँ करते है। अनामिका जी की बेजगह, ओढनी, स्त्रियाँ और उदय प्रकाश की औरतें आदि इसका स्पष्ट उदाहरण हैं।

समकालीन कविता का श्रोत प्रवाहमान धारा के समान गतिशील होकर आगे की ओर बहते ही रहते हैं। इसमें कवि अपने विद्रोह, आक्रोश, विरोध सब कुछ अपनी सृजनात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। इसलिए यह कहना उचित ही है कि समकालीन कविता प्रतिबद्धता और प्रतिरोध की कविता है। डॉ विश्वंभरनाथ उपाध्याय ने समकालीन कवि की संवेदना पर कहते हैं- "जिस देश में लूट मची हो, बलात्कारी अट्टहास, तंग दिली, तंग नजरी की ताव में सिर कट-काटकर गिर रहे हो, लोथों के पहाड़ लग रहे हो, वहाँ प्रबुद्ध रचनाकार रस की रचना प्रक्रिया न अपनाकर स्वयमेव